मैं राजनीति में
कितना सफल हुआ ?
इस सवाल से
अधिक ज़रूरी है
मेरे लिए
प्रदेशवासियों की
सुख-शान्ति।

■ **बृजमोहन अग्रवाल**

बच्चे, युवा या बुजुर्ग बुढ़े हर किसी के लिये बराबरी का सम्मान

अपने बंगले में स्कूली विद्यार्थियों के साथ

पूर्व राष्ट्रपति स्व. डॉ. शंकर दयाल शर्मा के साथ 1990 की तस्वीर में
जब अविभाजित मध्यप्रदेश में बतौर राज्यमंत्री स्थानीय शासन, पर्यटन, विज्ञान तथा तकनीकि विभाग संभाला

राजनीति में
रचनात्मक इतिहास
गढ़ने वाली शख्सियत

बृजमोहन अग्रवाल @ 24X7 जनसेवक

संकलन एवं संपादन :

राजेश गनोदवाले

- प्रकाशक : रायपुर स्वागत एवं प्रोत्साहन समिति, रायपुर (छ.ग.)
- सामग्री संदर्भ : तस्वीरें एवं कुछ सामग्री मीडिया प्रभाग बृजमोहन अग्रवाल
- सौजन्य वितरण हेतु
- वर्ष : 2014

आकल्पन : राजेश गनोदवाले, मो.: 09425520465, ई-मेल : rajeshganodwale@hotmail.com

डिजाईनिंग एवं प्रिंटिंग : हेमन्त ग्राफिक्स, रायपुर (छ.ग.) मो.: 09826152610

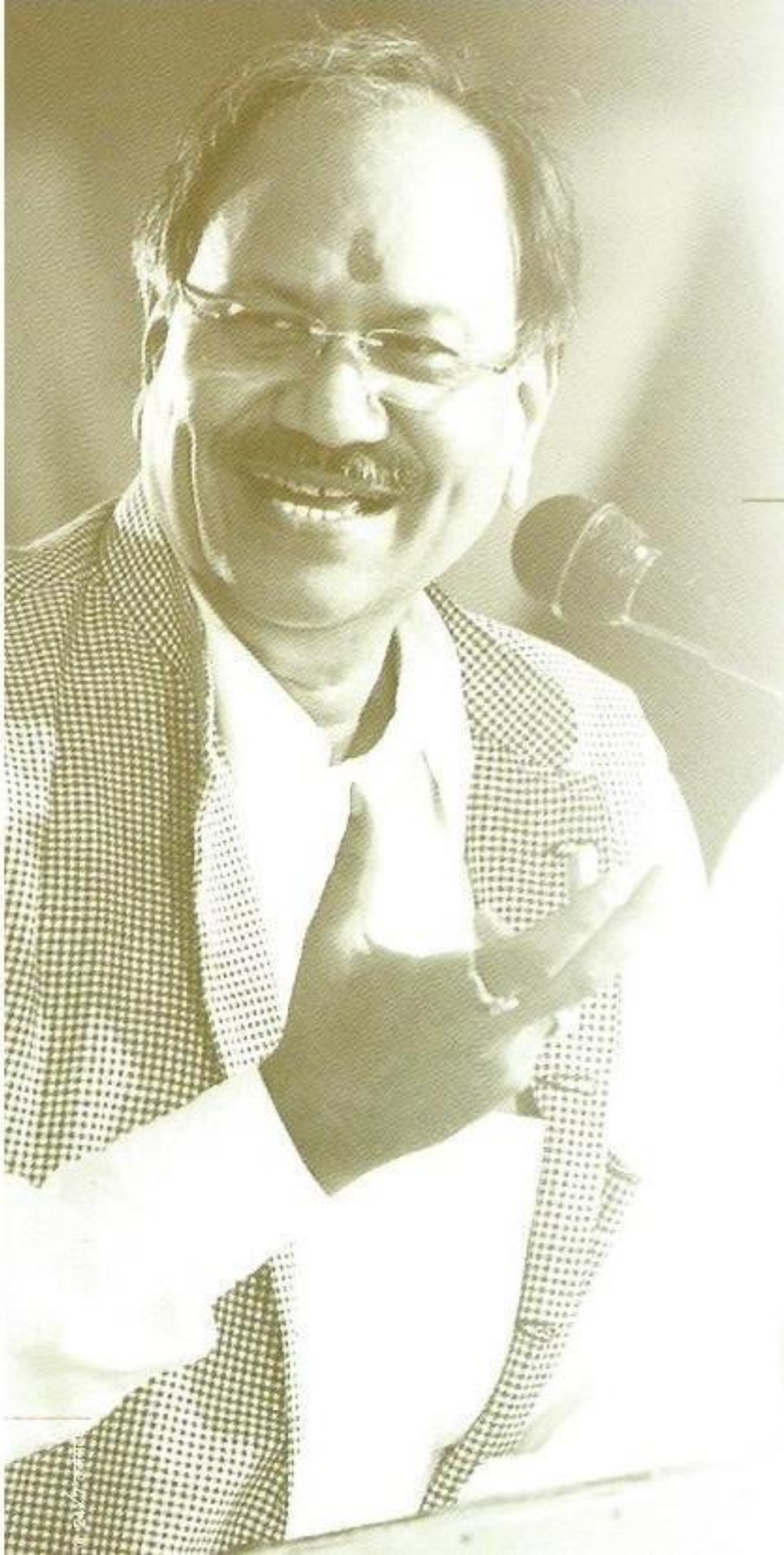

अनुक्रमणिका

॥ एक ॥

- भूमिका
- आत्म स्वर
- परिचय
- कुछ पहलू
- सौंदर्य सीपिया टोन का
- अविभाजित मध्य प्रदेश
- जब पं. श्यामाचरण ने कहा
- संकल्प बहस
- छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण
- इस्पात नगरी में बृजमोहन

॥ दो ॥

- राष्ट्रीय नेताओं का सानिध्य
- जीवन यात्रा के पड़ाव
- पिता के नज़र में पुत्र

॥ तीन ॥

- राजनीति में व्यक्तिगत जीवन
- देश विदेश में प्रदेश की आवाज़
- दुख में सुमिरन
- धार्मिक सहिष्णुता में यकीन
- सक्रियता की छवियाँ

॥ चार ॥

- संस्कृति-पुरातत्व
- पर्यटन
- धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व
- जेल विभाग
- वन संपदा
- विधिविधायी
- राजस्व
- खेल
- शिक्षा
- ललक लोक के निर्माण की

॥ पाँच ॥

- कलाकारों की सुध
- प्रादेशिक गौरव के क्षण
- छठा दृश्य

भूमिका

थोड़ा-सा कुछ अपना

सांस्कृतिक मामलों पर लिखना एक बात है और किसी व्यक्ति पर, जो इनसे संबद्ध विभाग के मंत्री हों, लिखना और बात। इसी तरह कुछ लोगों के बारें मे कहने-सुनने बैठें तो विचार काम नहीं करते! ठीक इसके विपरीत कुछ व्यक्तियों को लेकर दुविधा खड़ी होती है कि समाज को उनका जो देय है उसे ठीक ढंग से कैसे अभिव्यक्त करें ? छत्तीसगढ़ की राजनीति में एक धड़कन बने बृजमोहन अग्रवाल उन्हीं में दर्ज होते हैं जिनके संदर्भ में बात बड़ी गहराई और संजीदगी पूर्वक कही जा सकती हैं।

सामर्थ्य और सम्भावनाओं के शिल्पी

प्रदेश की ऐसी किसी राजनीतिक शख्सियत पर कॉफी टेबल बुक की यह संभवत: पहली कोशिश है। और इसे अमलीजामा पहनाने की तैयारी से पहले ही सतर्क था कि इसे न तो अभिनंदन ग्रंथ बनने देना है ना भीड़ भरे प्रकाशनों में से कोई एक। मेरी सांस्कृतिक अभिरुची और प्रदेश के जुझारू मंत्री के समग्र अवदान को इस नजरियें से देखने-दिखाने की पहल को सूत्रधार के रूप में साधना सुरीला संयोग है। दरअसल मध्यप्रदेश में पर्यटन मंत्री के रूप में उनके पहले मंत्रित्वकाल से लेकर छत्तीसगढ़ शासन की दोनों पारियों में दिये दायित्वों को उन्होंने सार्थक नतीजों में बदला। जब कभी उनसे मिलना हुआ प्रत्येक मुलाकात में उनकी गर्मजोशी व सहजता ने उनके प्रति अनुराग पैदा किया कि कुछ बात तो है- जो उन्हें इस मुकाम तक लाई। बावजूद उनके प्रति खिंचाव के, आंख मूंदकर आकर्षण में कभी नहीं बहा! पत्रकारिता के डेढ़ दशक से अधिक के समय में किसी भी व्यक्ति और विषय का तटस्थता से आंकलन करने की आदत और समीक्षक दृष्टि ने उनकी आलोचना के मौके भी नहीं छोड़े। कभी दक्षिण कोसल कहलाने वाला छत्तीसगढ़ और उसकी राजधानी ने इस व्यक्ति की 24 x 7 सक्रियता की बदौलत विकास की परिभाषा में अलग जगह बनाई। यह अकारण नहीं कि वे सबसे बड़े जनाधार वाले प्रादेशिक मंत्रियों में उभरकर आते हैं। लोकतंत्र की मजबूती मूल ध्येय बनाकर सांप्रदायिक सौहार्द्र के साथ समावेशी विचारधारा को अपनी कार्यशैली बनाने वाले बृजमोहन अग्रवाल के इस कथन में उनके राजनीतिक भविष्य की अनंत संभावनाओं का दृश्य उभरता है कि ***व्यक्ति का विचार शून्य होना उतना खराब नहीं जितना विचार विरोधी।*** बहरहाल, अपनी शर्तों पर काम करने की पद्धति से न डिगते, इस कॉफी टेबल बुक को पूरा किया। कुछ सामग्री मध्यप्रदेश से मिली तो कुछ उनके मीडिया विंग से। विशेष प्रसंगों पर लिखे अपने लेख भी शामिल किये हैं। यह कॉफी टेबल बुक उनके अवदान को जानने का एक जरिया है कि कैसे अपने सामर्थ्य से नई लकीर खींचकर दिखा दी। उनके कार्यकाल में जो भी नतीजा या नवाचार हुआ उसे अंतिम मानने की बजाय आगे देखने का एक खूबसूरत झरोखा कहना शायद ज्यादा तर्क संगत हो।

-राजेश गनोदवाले

रामनवमी, 8 अप्रेल, 2014

पूर्व प्रधानमंत्री
मान. अटल बिहारी वाजपेयी
के साथ
अविभाजित मध्यप्रदेश
के दौर में

आत्म स्वर

संस्कारिक प्रदेश की ऊर्जा मेरी धमनियों में

मैं छात्र जीवन से ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की छात्र इकाई अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से जुड़ा रहा । कॉलेज में छात्र संघ का अध्यक्ष भी रहा। छात्र हित की लड़ाई लड़ते-लड़ते आगे बढ़ते रहा। छात्र जीवन के बाद राष्ट्रवादी विचारों से परिपूर्ण राजनैतिक दल, भारतीय जनता पार्टी से जुड़कर जनहित के मुद्दों पर संघर्ष के क्रम में शहर की जनता का प्रतिनिधि होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ वही जिम्मेदारी आज तक वह निभा रहा हूँ।

हमारा छत्तीसगढ़ सही मायने में विशेषताओं का गढ़ है। पुरा सम्पदा से परिपूर्ण राज्य की नैसर्गिक सुंदरता देखते बनती है। राज्य अपने भीतर गौरवशाली इतिहास व परंपरा को समेटे है । यहां के लोगों जैसी सरलता व सहजता कहीं और नहीं मिलेगी। यह सम्पूर्ण रूप से संस्कारिक प्रदेश है। इसी प्रदेश की ऊर्जा मेरी धमनियों में है। राजनीति को मैं सेवा का रूप मानता हूँ। राजनीति में रहकर हम समाज और देश की ज्यादा बेहतर सेवा कर सकते हैं। मैं राजनीति में कितना सफल हुआ इस सवाल से अधिक जरूरी है मेरे लिए प्रदेशवासियों की सुख-शान्ति । इस बात की जरूर खुशी है कि जनता ने मुझ पर जो भरोसा जताया उस पर मैं खरा उतरा हूँ।

पिछले 10 वर्षों में हमारी सरकार ने जिस संवेदनशीलता के साथ जनहित के काम किये उसी का सुपरिणाम है कि आज हम जनता के चहेते हैं। गांव-गरीब और किसानों की चिंता हमने की । हमने 1-2 रूपये किलो में गरीबों को अनाज देकर भूख पर विजय पाई। एक वक्त ऐसा था जब धान का कटोरा कहलाने वाले राज्य में गरीब, भूखे पेट सोने मजबूर थे। हमने ईमानदारी के साथ सर्वांगीण विकास का प्रयास किया । यह देश का एकलौता राज्य है जहां 24 घंटे बिजली मिलती है। सड़क, पानी जैसी मूलभूत सुविधाओं के अभाव को हमने काफी हद तक कम कर दिया। छत्तीसगढ़ के गांव-शहरों में बह रही विकास की बयार देखी व महसूस की जा सकती है। हमने विपक्ष को

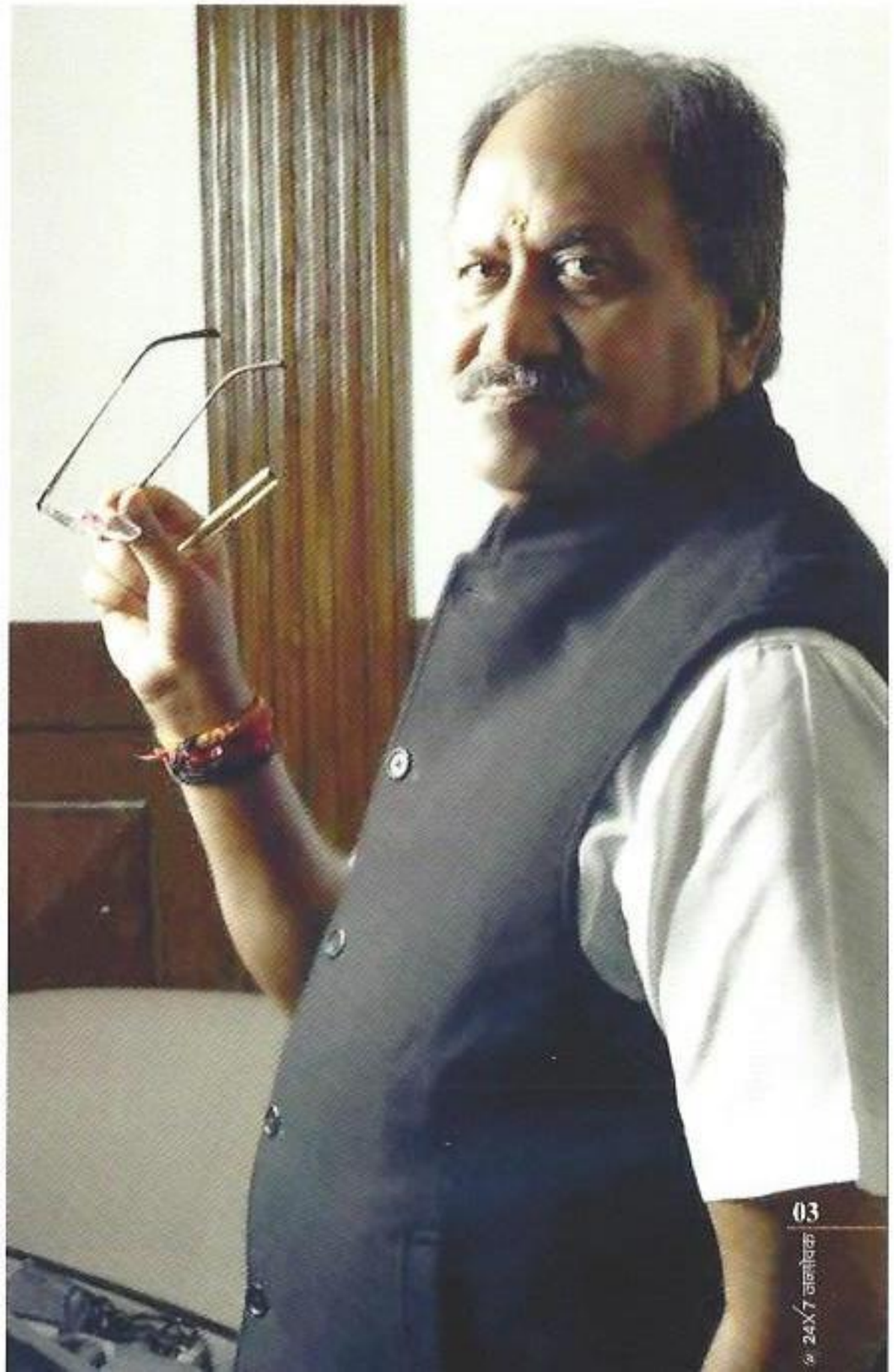

कमजोर नहीं समझा, राजनीति अपनी जगह है, व्यक्तिगत-पारिवारिक संबंध अपनी जगह। संबंधों का मेरे जीवन में अहम स्थान है। एक जन प्रतिनिधि के नाते मैं पूरे वक्त जनता के समक्ष उपलब्ध रहता हूँ। जनता में सभी आते हैं। वैसे भी राजनीति को मैंने व्यक्तिगत संबंधों से परे रखा है।

●●●

हमने पिछले दस वर्षों में जो कार्य किये उसे ही लेकर जनता के पास जायेंगे। सड़कें, बड़े-बड़े ब्रिज, बड़ी बिल्डिंगें यहां विकास की गवाह हैं। आज छत्तीसगढ़ विकसित राज्यों की श्रेणी में मुस्कुराता हुआ खड़ा है। श्रेय निश्चित ही हमारी सरकार को जाता है। यहां सभी वर्गों के हितों का पूरा ख्याल रखा गया है। नौकरी पेशा, व्यापारी और खासतौर पर गांव, गरीब और किसानों की बेहतरी के ऐतिहासिक काम किये । गरीब-मजदूरों के जीवन स्तर सुधारने 36 योजनायें बनाई। कम दरों में अनाज के साथ ही, उनको रोजगार के साधन उपलब्ध करा स्वालम्बी बनाते उन्हें मुख्यधारा में जोड़ा। बेटी की शादी, बच्चे का जन्म, उसकी शिक्षा, पारिवारिक सदस्यों की मृत्यु इन घड़ियों में भी सरकार उनके साथ खड़ी है। संस्कृति व संस्कार ही देश की पूंजी है। इसकी रक्षा के लिए हम संकल्पित हैं। एक राजनेता के रूप में यह हमारा धर्म भी है।

●●●

यहां त्रिवेणी संगम राजिम में होने वाले ऐतिहासिक मेले को हमने कुंभ स्वरूप प्रदान किया। माघ पूर्णिमा से शुरू होकर 15 दिनों तक होने वाले इस आयोजन में देशभर से हजारों साधु-संत छत्तीसगढ़ की पावन धरा में पाव रखते हैं। प्रतिवर्ष राजिम कुंभ को प्रसिद्धि मिलती जा रही है। इसे लोग मध्यभारत का प्रयाग कह कर पुकारते हैं । हमने प्रदेश भर में आयोजित होने वाले 32 बड़े मेलों को महोत्सव का रूप दिया है। हमारा राज्य पुरा-संपदा से परिपूर्ण है। ऐतिहासिक नगरी सिरपुर में विश्व की सबसे बड़ी खुदाई की जा रही है। जिसे विश्व धरोहर में शामिल करने प्रयास किये जा रहे हैं। यहां भगवान बुद्ध की प्रतिमाएँ प्राप्त हुई इस कारण बौद्ध पर्यटन स्थल के रूप में इसे प्रसिद्धि मिली।

ईश्वर ने जितनी क्षमता दी उसके अनुसार हमेशा प्रयासरत रहूंगा. और क्षेत्रवासियों की मदद को तत्पर रहूंगा.

लोक निर्माण विभाग ने अन्तरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम बनाकर दुनिया को सरप्राइज दिया है। किसी ने सोचा नहीं था कि नए राज्य में इतना सुन्दर सर्वसुविधा युक्त स्टेडियम साकार होगा। आईपीएल मैच के दौरान यहां आने वाले राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय खिलाड़ियों ने इसकी खूबसूरती की तारीफ करते हुए इसे देश का सर्वश्रेष्ठ स्टेडियम करार दिया। शिक्षा के क्षेत्र में भी हमने अभूतपूर्व कार्य किये हैं। पिछले दस वर्षों में हमने 19 हजार नए स्कूल खोले हैं। डेढ़ लाख शिक्षकों की भर्ती की। दसवीं तक बच्चों को मुफ्त किताब, आठवीं तक बच्चों को मुफ्त स्कूल ड्रेस, मध्यान भोजन, स्कूली बच्चियों को सायकल प्रदान कर बेहतर शिक्षा प्रदान करने ठोस प्रयास किया । पर्यटन के क्षेत्र में भी प्रसिद्ध हिल स्टेशन मैनपाट, चित्रकोट जलप्रपात, बारनवापारा के जंगलों जैसे पर्यटन दृष्टि से दर्जनों महत्वपूर्ण स्थानों में सर्वसुविधायुक्त होटल-मोटल का निर्माण कर पर्यटकों की सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा।

राज्य निर्माण के पूर्व छत्तीसगढ़ की हमेशा उपेक्षा होती रही। छत्तीसगढ़ियों की पीड़ा को महसूस करते हुए पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी ने अलग छत्तीसगढ़ का निर्माण कर हमें उपेक्षा से मुक्ति दिलाई। आज यह नवोदित राज्य विकास के मामले में देश के अन्य राज्यों की तुलना में अग्रिम पंक्ति में है।

काम बोलता है...

हमने राज्य व जनता के हित में जो किया वो आज तक किसी सरकार ने नहीं किया । काम बोलता है।

परिवार के संग

परिचय

जन्मतिथि	:	1 मई, 1959
निवास	:	रामसागरपारा, रायपुर (छत्तीसगढ़)
शैक्षणिक	:	एम.कॉम, एम.ए., एल.एल.बी.
पिता-माता	:	श्री रामजीलाल अग्रवाल व श्रीमती पिस्ता देवी अग्रवाल
धर्मपत्नी	:	श्रीमती सरिता अग्रवाल
संतान	:	अभिषेक, शुभकीर्ति, आदित्य
1977	:	अ.भा.वि. परिषद के माध्यम से छात्र राजनीति में प्रवेश।
1981-82	:	अध्यक्ष, छात्रसंघ दुर्गा महाविद्यालय एवं प्रमुख सलाहकार वि.वि. छात्र संघ
1982-83	:	अध्यक्ष, छात्रसंघ कल्याण महाविद्यालय, भिलाई
1986	:	प्रदेश मंत्री, भारतीय जनता युवा मोर्चा
1988-90	:	प्रदेश उपाध्यक्ष, भा.ज.यु. मोर्चा
1990	:	प्रथम बार विधायक निर्वाचित, अविभाजित म.प्र. में राज्यमंत्री-स्थानीय शासन तथा पर्यटन, विज्ञान एवं तकनीकी विभाग (स्वतंत्र प्रभार)
1991-94	:	प्रदेश महामंत्री, भाजयुमो
1993	:	दूसरी बार विधायक निर्वाचित, म.प्र. विधानसभा की प्रश्न एवं संदर्भ, विशेषाधिकार तथा शासकीय अश्वासन समिति के सदस्य
1994-98	:	मंत्री, म.प्र. भाजपा विधायक दल
1998	:	तीसरी बार विधायक निर्वाचित, मुख्य सचेतक भाजपा विधायक दल, सदस्य भाजपा प्रदेश कार्य समिति, म.प्र. विधानसभा की सरकारी उपक्रम समिति के सदस्य, सदस्य भा.ज.यु. मोर्चा राष्ट्रीय कार्यकारिणी ।
2000	:	सदस्य, लोकलेखा समिति एवं कार्य-मंत्रणा समिति, छत्तीसगढ़ विधानसभा
2003	:	लगातार चौथी बार विधायक निर्वाचित, छत्तीसगढ़ शासन में गृह, परिवहन, संस्कृति, पर्यटन, श्रम मंत्री ।
2005	:	राजस्व, संस्कृति, पर्यटन विधि विधायी, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व, पुर्नवास मंत्री
2006	:	अतिरिक्त प्रभार-वन, खेल एवं युवा कल्याण विभाग मंत्री
2007	:	2005 एवं 2006 के सभी मंत्रालय विभाग यथावत
2007	:	मालखरौदा विधानसभा उपचुनाव प्रभारी की जिम्मेदारी, भाजपा उम्मीदवार की ऐतिहासिक जीत दर्ज ।

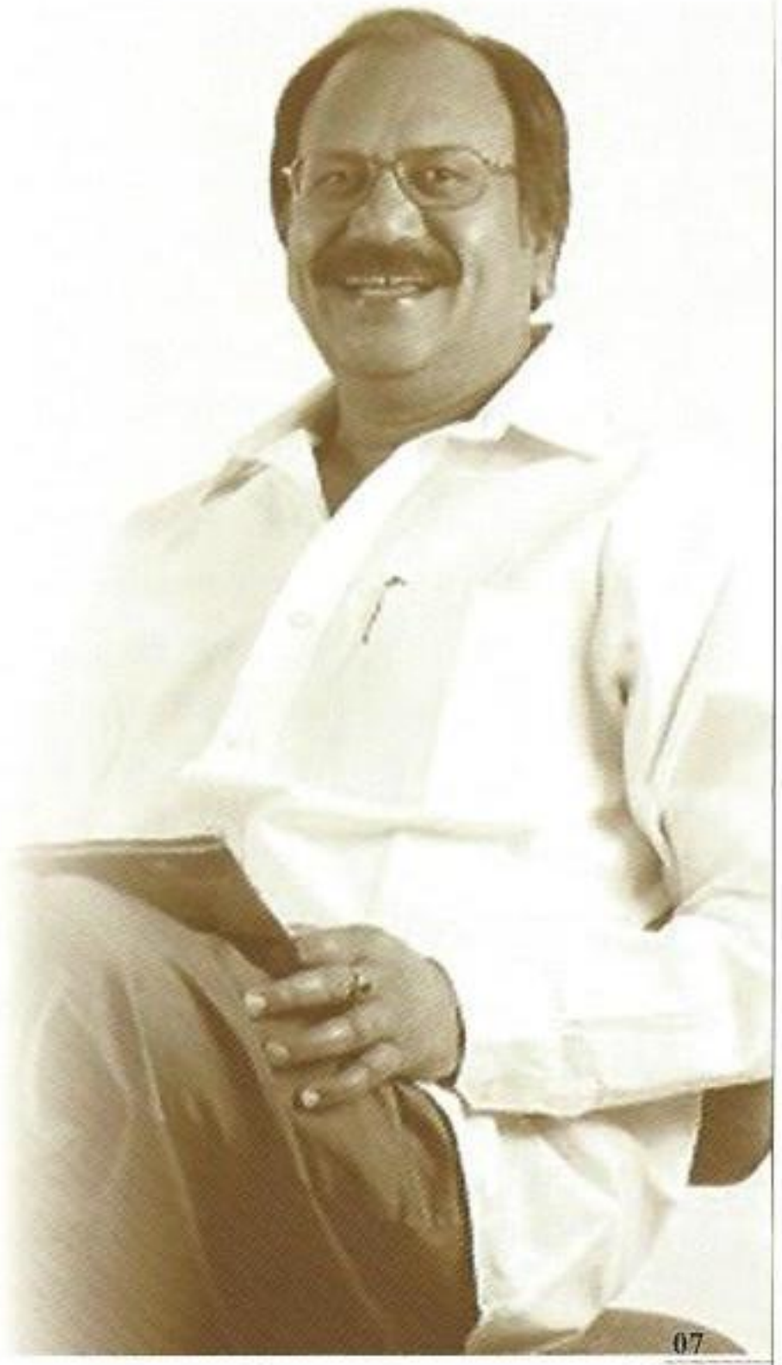

कुछ पहलू

इस जुझारू लेकिन विनम्र व्यक्ति के

रायपुर से विधायक तथा छत्तीसगढ़ राज्य के वरिष्ठ कैबिनेट मंत्री श्री बृजमोहन अग्रवाल सिर्फ शहर के नहीं संपूर्ण छत्तीसगढ़ में बड़े नेता माने जाते हैं। काम करने की अलग शैली ने उन्हें पार्टी व शहर तथा राज्य की सीमा को लांघकर लोकप्रियता दिलाई। इस बात की स्वीकारोक्ति जनमानस के बीच हो चुकी है कि वे छत्तीसगढ़ राज्य के एकमात्र ऐसे नेता हैं जिनका जनाधार सबसे बड़ा है तथा उन्हें हृदय से चाहने वाले परोक्ष-अपरोक्ष समर्थक सबसे ज्यादा है।

उनके मुकाबले फिलहाल रायगढ़ से राजनांदगांव, जशपुर, अंबिकापुर से बस्तर तक कोई दूसरा नेता नहीं, जिनके बीच बृजमोहन अग्रवाल जैसा विशाल जनसागर हो। बड़े पदों में आने के बाद कई नेता ताकतवर हो जाते हैं, किन्तु पदविहीन होने के बाद उनके साथ गिनती के लोग ही दिखई पड़ते हैं। उनमें से बृजमोहन अग्रवाल अलग छवि रखते हैं।

हमेशा आम जनता के दिलों में

एक ऐसा नेता जो विपक्ष में हो या सरकार में, रहता हमेशा आम जनता के दिलों में, और आम जन की आशा आकांक्षाओं, उसकी भावनाओं, उसकी पीड़ा ही जिसकी राजनीति के केन्द्र में रहे। यह पहचान है चिरयुवा इस जुझारु लेकिन विनम्र व्यक्ति की। अपनी इस राजनैतिक शैली के चलने उन्होंने अपने विधानसभा क्षेत्र में ही नहीं पूरे राज्य में, राज्य से बाहर भी व्यापक लोकप्रियता व ठोस आधार बनाया है।

इनके जैसा कोई दूसरा नहीं

मैंने राजनीति को सत्ता पाने का साधन कभी नहीं माना। मेरे लिए राजनीति एक नई आर्थिक, सामाजिक संरचना के निर्माण का माध्यम रही। मैं हमेशा विचारधारा व सिद्धांतों की राजनीति का पक्षधर रहा और रहूँगा।

मुखर नेता, स्पष्ट वक्ता

आज के दौर में जब मुद्दे शख्सियतों पर भारी पड़ रहे हैं, तब उन्होंने व्यक्तित्व का आभामंडल कायम किया है। वे नम्र स्वभाव के धनी हैं और मंत्री के तौर पर सख्त प्रशासक भी । उनके कट्टर समर्थक भी इस बात के कायल हैं कि ईमानदार और मेहनती बृजमोहन अग्रवाल की वचनबद्धता संदेह से परे है। उन्होंने जो कहा-सो किया तभी तो सर्वश्रेष्ठ विधायक चुने गये । उनके दिल और दिमाग में राजनैतिक विद्वेश के लिये कोई जगह नहीं। वे संदेश हैं और संदेशवाहक भी। मुखर नेता, स्पष्ट वक्ता और भरोसे वाला जनप्रतिनिधि होने के कारण ही राज्य की सत्ता में सर्वाधिक लोकप्रिय हुए।

सबके ऊपर इनका हाथ

श्री अग्रवाल ने खुद को जनता के लिये धर्मनिरपेक्ष आत्मा के तौर पर समर्पित कर दिया है। राज्य मंत्रिमण्डल से लेकर छत्तीसगढ़ की राजनीति में वे ऐसे मंत्री के तौर पर जाने जाते हैं जिनका जनता- दरबार सबेरे नौ बजे से रात को 12 बजे तक सजता है। यहां से कोई भी शख्स खाली नहीं लौटता, फिर उसकी हैसियत चाहे जो हो या जिस धर्म, जाति या समाज का हो। राग-द्वेष से परे हटकर सबकी मदद को तैयार रहते हैं । उनका सबसे बड़ा संदेश: बस, हर चेहरे पर मुस्कान दिखे ।

सघन संपर्क

छत्तीसगढ़ से लेकर पार्टी के राष्ट्रीय दिग्गजों तक और आम आदमी से लेकर उच्च वर्ग के बीच उनका व्यापक नेटवर्क है। विशेषतौर पर राजनैतिक मित्रमंडली, जिनमें कई-सरकार में मंत्री, आयोग-मंडलों के अध्यक्ष, नगरीय निकायों के पदाधिकारी और दूसरे राजनीतिक दलों के महत्वपूर्ण पदों पर बैठे हैं । इसके अलावा सैकड़ों अजीज विविध क्षेत्रों में काम कर रहे हैं।

दोस्तों का स्नेह, जनता का आर्शीवाद और पार्टी का विश्वास बना रहे, मेरी इतनी ही कामना है।

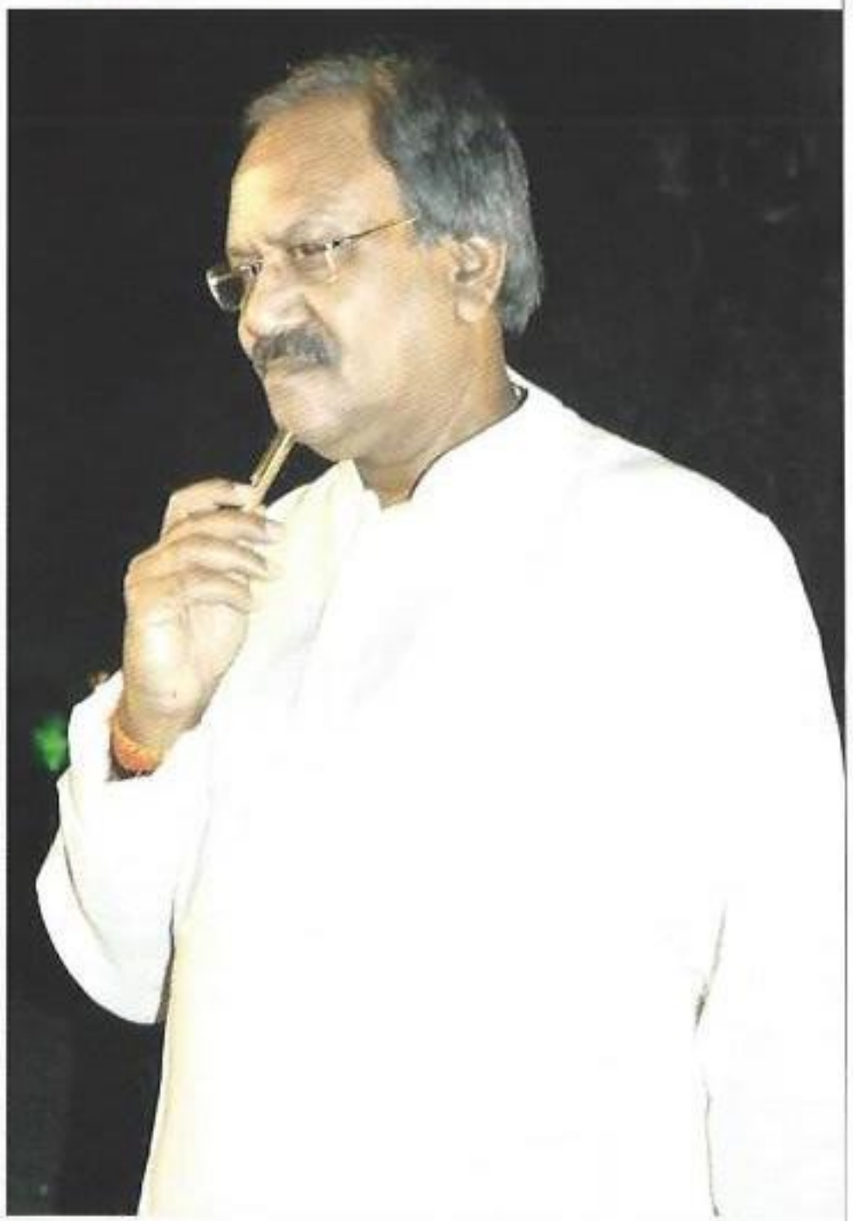

कभी छोटा बड़ा नहीं देखा

वे एक ऐसे राजनीतिज्ञ हैं जो छोटा हो या बड़ा, सभी कार्यकर्ताओं को महत्व देते हैं। वे कुशल राजनेता और अच्छे प्रशासक हैं। गली मोहल्लों के छोटे-छोटे कार्यक्रम हों या आम लोगों के छोटे-छोटे सुख-दुख, यह शख्स अक्सर ऐसे मौंको पर नजर आ ही जाता है। पता नहीं कितने लोगों को वह नाम से जानता है। हाल चाल पूछता है, हाथ मिलाता है। लोग उसकी एक नजर और एक मुस्कुराहट पाकर गद्गद् हो जाते हैं। परेशान और निराश लोगें को उम्मीद की किरण मिलती है कि उनका अपना भी कोई है। इस शख्स का नाम है - बृजमोहन अग्रवाल ।

छात्र जीवन से इसकी शुरूआत हुई जो अनवरत जारी है। चाहे वो दुर्गा कॉलेज छात्रसंघ अध्यक्ष का पद हो या मंत्री का, अपनी हर भूमिका इन्होंने काफी संजीदगी से निभाई व निभा रहे हैं।

भाजपा में उनके प्रवेश का श्रेय गोविंद सारंग को जाता है। उन्होंने राजामाता विजयाराजे के हाथों भाजपा की सदस्यता ग्रहण की । प्रेमप्रकाश पाण्डे, देवजी भाई पटेल उनके छात्र जीवन के सहयोगी रहे ।

1959 में रामजीलाल व पिस्ता देवी के यहां जन्में बृजमोहन शुरू से ही समाज सेवा में लगे रहते थे। शायद उनका यही गुण उन्हें राजनीति में इतनी दूर तक ले आया।

इसे दैवीय संयोग माने की श्री बृजमोहन अग्रवाल का जन्म अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस यानी 1 मई को हुआ।

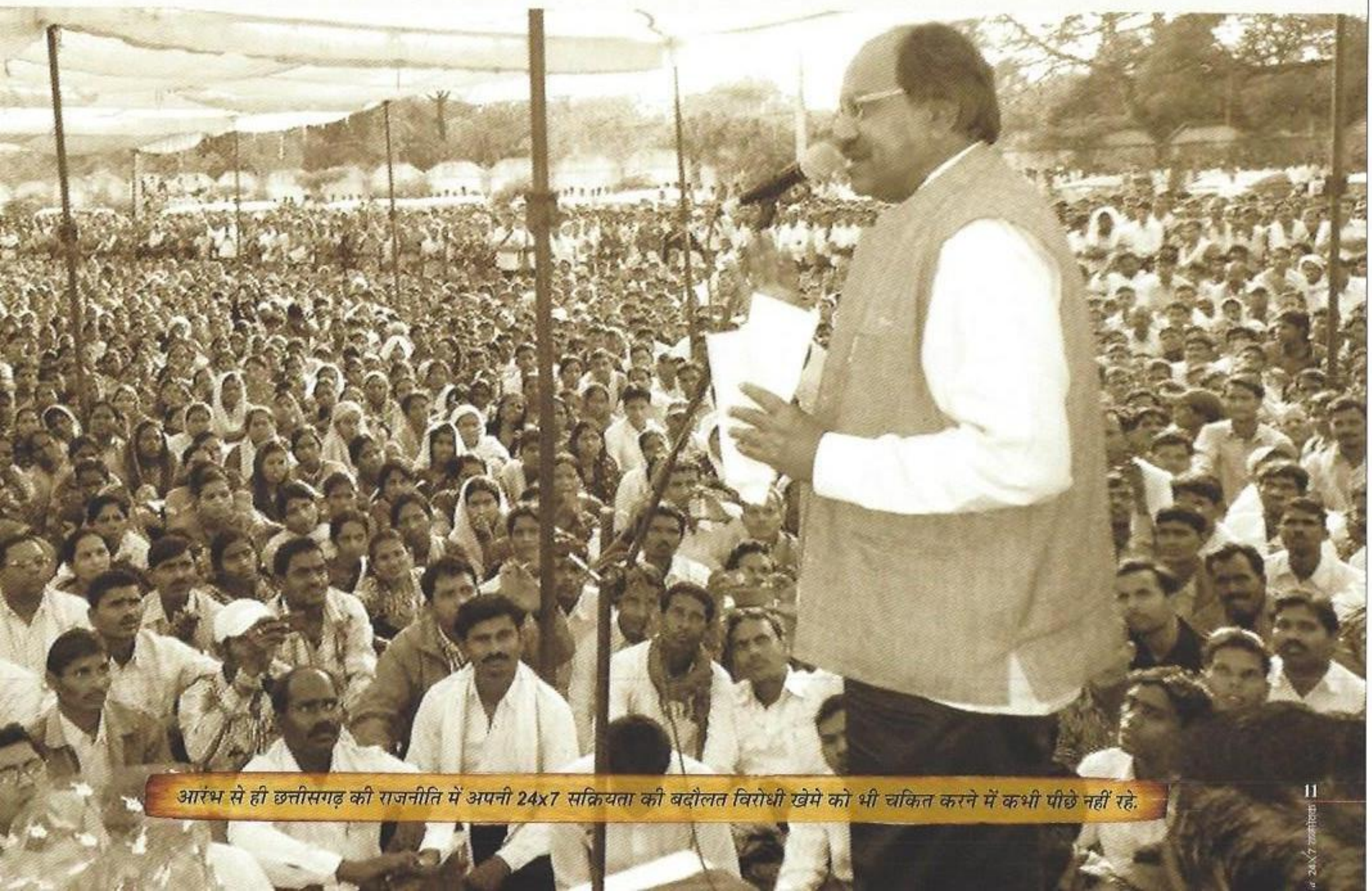

आरंभ से ही छत्तीसगढ़ की राजनीति में अपनी 24x7 सक्रियता की बदौलत विरोधी खेमे को भी चकित करने में कभी पीछे नहीं रहे.

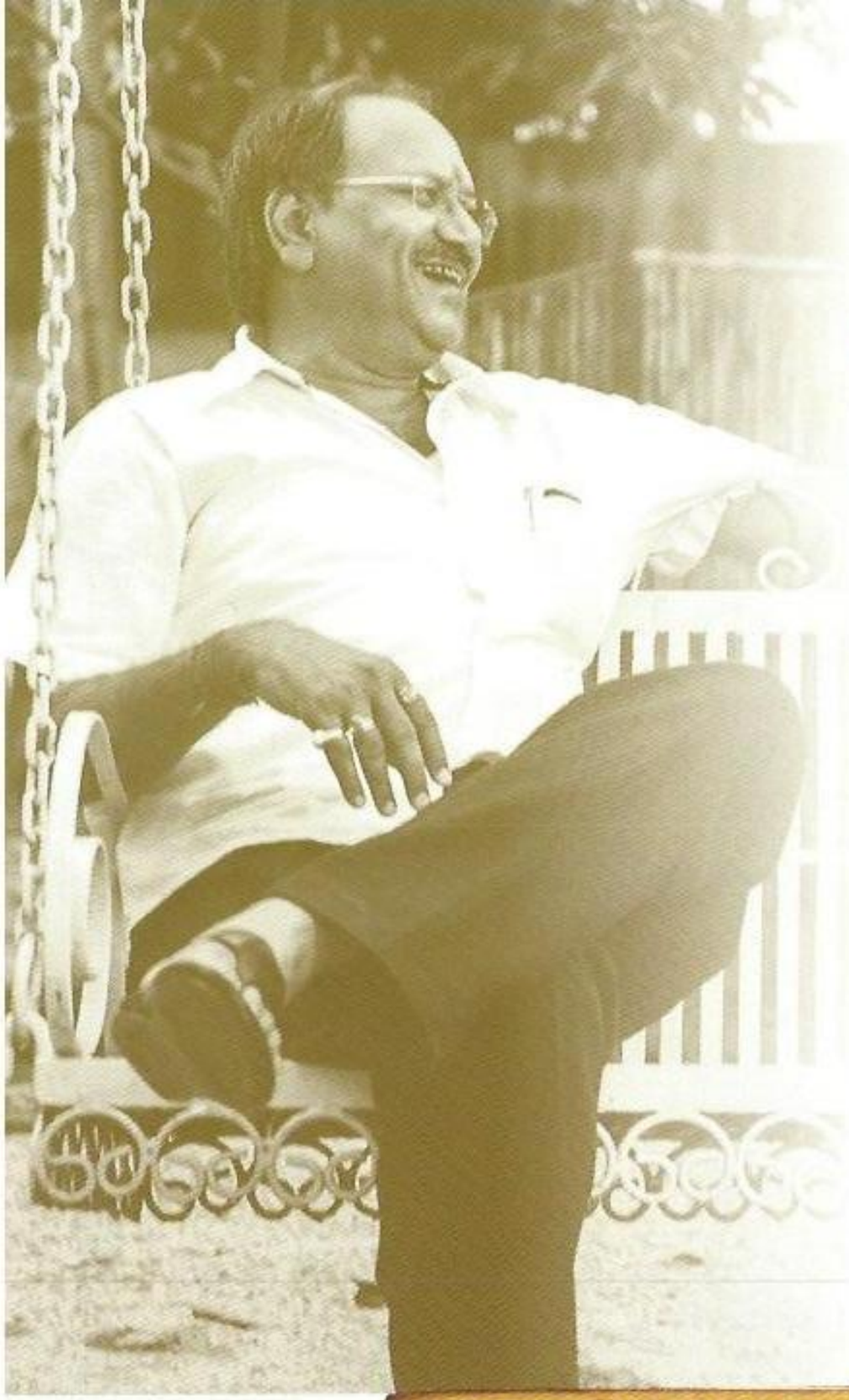

दिनारंभ

बतौर विधायक जीवन के 25 वर्ष पूरे हो चुके हैं। लेकिन दिनचर्या आज भी घड़ी के काँटे के मानिंद तयशुदा। दिन की शुरुआत चाय के साथ अख़बारों पर नज़र फेरते हुए। इसी मध्य मार्निंग वॉक के लिए भी समय निकालना याद रहता है। थोड़ा समय योग और प्रणायाम के लिए। प्राय: दिन में 15-16 घंटे काम चलता रहता है। रात में 2-2½ बजे के पहले कभी सोया नहीं। तैयार होकर निकलते ही कार्यकताओं और नागरिकों से मुलाकात। यदि बाहर जाना न हो तो कार्यालय में बैठकर मुलाकात और फाईलें निपटाना। समस्याओं का समाधान या फाईलों का जितनी जल्दी निपटारा हो उतना ही अच्छा। काम लंबित रखना पसंद नहीं। विकास से जुड़ी हुई फाइले हमेशा प्राथमिकता रही। मोबाईल पर काम निपटाने का कौशल भी बखूभी साध रखा है। प्रत्येक कॉल अटेण्ड करना। जो लोग मिलने आ नहीं पाते वे फोन से संपर्क करते हैं। घंटे भर में सौ से अधिक कॉल का औसत। कितनी भी व्यवस्ता, परेशानी अथवा शारीरिक-मानसिक दिक्कतें क्यों न हो, कभी उन्हें नाराज़ होते देखा नहीं गया। सामने वाले यदि गुस्से से पेश आये तो भी अपनी सहनशीलता या मुस्कुराहट से उसे शांत कर देना वह खूबी है जो इस दौर में लगातार सिमट रही है।

जिनके राजनैतिक प्रबंधन का लोहा
मैनेजमेंट गुरुओं ने माना

प्रतिदिन दिन दो से तीन सौ लोगों से मुलाकात, घंटे भर में सौ से ज्यादा फोनकॉल, आगंतुकों की तादाद सीएम से ज्यादा

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below

Free-Ebooks.net